ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.11, Issue: 144, Jan 2025
Paper ID: RRJ538253
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ538253

समकालीन चुनौतियां और हिंदी कविता के युवा स्वर

लेखक
डॉ. प्रियंका कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
साबरमती विश्वविद्यालय, अहमदाबाद,गुजरात

सार

वर्तमान समय में समकालीन चुनौतियों पर हिन्दी के पुनराकारों विभिन्न पक्षों को लेकर एवं समकालीन चुनौतियों को सकारात्मक रूप से अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है इसमें से विदुओं को लेकर युवा कवियों ने अपने पक्ष को इस मजबूती के साथ अन्य किया है। राजनीति, सामाजिक परिदृश्य स्त्री विमर्श आदि।

शब्द कुंजी: समकालीन, चुनौतियां, कविता, युवा स्वर, परिदृश्य

मूल आलेख:

आज साहित्य और राजनीति एक दूसरे का प्रेरक परे है। पोचो एक से प्रभावित हो गये है। समकालीन हिन्दी कविता का मुख्य चारा विरोध। उसके विरोध का आभार जरूर राजनीति है। हम जानते है किस 100 से बाद ऐसी अनेक राजनैतिक पटनाएं जिसके कारण आम आदमी बहुत संघर्ष किया है। इन घटनाओं ने उन्हें स्वयं ही सत्ता के विरोध में लड़ा कर दिया। एचके पद से राजनीति के विरूद्ध मोहभंग होने लगे। आउने दशक में कविता को स्वरूप आये आया उसमें राजनीतिक एक धारणा नहीं अनुभव बनकर सामने आयी है।१० की कविताओं में सपाट बयान एवं व्यय के माध्यम से करियों के व्यवस्था की सारी बुराईयों का पर्दाफाश करने का प्रयास किया है। इसलिए समकालीन अधिकतर कवियों ने अन्यायी व अत्याचारी पर प्रहार करने के लिए को एक समा हथियार के रूप में स्वीकार किया है। समकालीन कवियों ने राजनीतिक क्षेत्र में चुनाव, कुस्ती, शोषण की विकृत राजनीति का डाफोड़ कर सकी राजनीतिक दल व्यवस्था के प्रति अनास्था व्यक्त की है।

वर्तमान में राजनीतिक व्यवस्था में कविता के युवा स्वर इस प्रकार

विकल्प–

विकल्प थे दो
दो ही विकल्प
मुख्यमंत्री को कविता सुनाने और
हाड़ कपाती ठंड में कम्बल बांटने के बीच
चुनना था किसी एक को
निर्णय के इस द्वन्द में हालांकि

ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.11, Issue: 144, Jan 2025
Paper ID: RRJ538253
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ538253

इस खुश फहमी की भी गुंजाइश नहीं कोई

कि कोई त्याग देगा प्राण इन्तजार में कम्बल के

बहुत मुमकिन है

पा के कम्बल भी पाया जायेगा कोई मृत अलस्सुबह वह नहीं होते कामयाब कम्बल ढकने में भूख गरीबी, लाचारी कितना अच्छा होता।

साहित्य और जीवन में समकालीन जैसे शब्द का प्रयोग हमेशा होते ही रहते हैं क्योंकि साहित्य और जीवन की प्रवृत्तियों का कालक्रम के अनुसार बदलती रहती है। समकालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता युगीन विडम्बनाओं एवं संभावनाओं को अपने आप में समेटे हुए है। आज का समूचा परिवेश बड़ी तेजी से बदल रहा है। वर्तमान समाज में दलित दमित जातियां अपने अधिकारों के प्रति सचेत होकर संघर्ष कर रही हैं महिलाएं जो समाज की आधी आबादी का हिस्सा हैं।

अपनी अस्मिता को तलाश रही है। समूचा विश्व आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता की तरफ जा रहा है। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया पूर्व एवं पश्चिम की दूरी को मिटाने का प्रयत्न कर रही है चारों ओर बाजारवाद का जोर है सूचना क्रान्ति ने ज्ञान एवं अवसर के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी है। इसी दौर में आतंकवाद की विनाशक शक्ति से सम्पूर्ण विश्व पीड़ित है। ऐसे परिवेश में आज की हिन्दी कविता युगीन परिवेश को पकड़ने की बराबर कोशिश कर रही है और आज का युवा रचनाकार इन सबको ध्यान में रखकर ही अपनी कविता की रचना कर रहा है।

"बच्चों से माफी मांगता हूँ मैं कि

टी वी इन्टरनेट और वीडियो गेम्स ने

तुमसे असमय ही तुम्हारा बचपन छीन लिया"

युवा कवि जितेन्द्र श्रीवास्तव अपनी कविताओं में समकालीन सामाजिक यथार्थ से बराबर टकराते हैं। उनकी कविताएं इक्कीसवीं सदी के गहराते संकट एवं जीवन संघर्ष को व्यापक पैमाने पर सामने लाती है और जन सामान्य से संवाद कायम करती है।

मैं इक चिड़िया हूं पापा, पिता बेटियां जैसी कविताओं में सामाजिक परिप्रेक्ष्य व्यापक रूप से प्रतिफलित हुआ है। 'वे बेटियाँ शीर्षक' कविता में समाज में बेटियों के महत्व को स्थापित करते हुए सामाजिक अन्तर्विरोध को इस प्रकार अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं–

"जितनी हंसी होती है बेटियों के अधर पर

उतनी उजास होती है पिता के जीवन में

जो न हंसे बेटियां

तो अंधेरे में खो जाते हैं पिता"

ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.11, Issue: 144, Jan 2025
Paper ID: RRJ538253
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ538253

समाज के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने लोगों की सभी श्रेणियों की समस्याओं को सहानुभूति के साथ देखे आर्थिक असमानताओं तथा अन्याय की समस्याओं के समाधान ढूंढे। जन चेतना को व्यापक आयाम देने के कार्यक्रम चलाये, मिथक की अधीनता के विरूद्ध इतिहास के सच्चे अर्थ का उन्नयन करे तथा निर्णय करने में सहभागिता की प्रक्रियाएं प्रारम्भ करे।

इसके लिए पूर्वाग्रह मुक्त होकर शोषण एवं आतंक की रचनाओं को मिटाना जरूरी है। और आज का युग रचनाकार समकालीन हिन्दी कविता के सामाजिक परिदृश्य को समझनपे का प्रयास कर उसे प्रगति की राह पर अग्रसर करता जा रहा है।

स्त्री विमर्श भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। जिन परिस्थितियों को लेकर स्त्री चिन्तन अग्रसर है। वे निश्चित ही विचारणीय हैं और निराकरणीय भी।

"देह की मृत कोशिकाओं में

गुदगुदाते अहसास के साथ

नेक समाज के लिए लेटी है

एक स्त्री

एक स्त्री संध्या मोजन के लिए

भटक रही है

ईंधन के जुगाड़ में"

वर्तमान समय में नारी का दृष्टिकोण बदल रहा है। स्त्री का सामाजिक नियम एवं विधानों के प्रति उत्पन्न अवज्ञा भाव, पारिवारिक स्तर पर नारी की स्वतंत्रता राजनैतिक स्वतंत्रता, शिक्षा की स्वतन्त्रता, यौन सम्बन्धों के प्रति उदासीन होती नारी

आर्थिक रूप से सक्षम होने के कारण स्वयं को बन्धनों और रूढ़ियों से मुक्त कर रही है।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि समकालीन चुनौतियों में हिन्दी कविता के युवा स्वर में कवियों ने राजनीति सामाजिक परिदृश्य स्त्री-विमर्श आदि को समाहित करते हुए अपनी अभिव्यक्ति अभिव्यक्त की है।

सन्दर्भ सूची

1. प्रीति चौधरी विकल्प, नया ज्ञानोदय, अक्टूबर 2013 पृ० 6-56
2. सुशान्त सुप्रिय, सुनो, वर्तमान साहित्य, जनवरी 2014 पृ० 6-53
3. अरविन्द श्रीवास्तव, एक स्त्री, वागार्थ, फरवरी 2014, पृ० 6-35